शोध-सारांश

विद्यानिवास मिश्र का लालित्य चिंतन

(विशेष संदर्भ तुम चंदन हम पानी)

विद्यानिवास मिश्र के लालित्य-चिंतन को मुख्यतः तीन स्तरों पर सौंदर्य शास्त्रीय दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है। ये स्तर हैं- सौंदर्य, कला और लोक जीवन।

लालित्य चिंतन मनुष्य को प्रकृति, कला और संस्कृति से जोड़ने का वह विमर्श है, जिसके अंतर्गत अंतःसंबंध स्थापित करने पर अधिक बल दिया जाता है। इस लघु शोध-प्रबंध का मुख्य ध्येय भी यही है।

प्रकृति से मनुष्य प्रेरणा पाकर अमुक-अमुक कलाओं का सृजन अमुक-अमुक उद्देश्य की पूर्ति हेतु करता है। कला संबंधी वाद-विवाद और संवाद यहीँ से आरंभ हो जाते हैं। कला को अपनी सार्थकता सिद्ध करने के लिए उनसे टकराना एक प्रकार से अनिवार्य हो जाता है। इस प्रबंध में भी टकराहट की कुछ झलक अवश्य मिली है।

विद्यानिवास मिश्र के चिंतन में प्राकृतिक और कलात्मक दोनों ही सौंदर्य को देखा जा सकता है। सौंदर्य उनके लिए अखंड वस्तु है। दरअसल सौंदर्य और लालित्य हमारे मन मस्तिष्क में सुकोमल भावों संवेदनाओं को जागृत करते हैं। परंतु दोनों में अंतर यह है कि एक का स्रोत ईश्वर प्रदत्त प्रकृति के समस्त उपादान हैं, तो दूसरे का स्रोत मानव सृजित रचनाएं हैं। यद्यपि इन्हें पृथक् करके देखना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है क्योंकि ये एक-दूसरे से अत्यधिक संश्लिष्ट होते हैं। यदि सौंदर्य मानवीय प्रेम का प्रारंभिक रूप है तो लालित्य उसका चर्मोत्कर्ष है , जिसे काव्य-शास्त्रीयों और सौंदर्य-शास्त्रियों द्वारा 'उदात्त' नाम दिया गया है। सौंदर्य और लालित्य का कार्य मन को संवेदित, प्रफुल्लित और आह्लादित करना है। प्राकृतिक सौंदर्य

द्वारा मानव प्रेरणा पाकर अपनी सर्जना शक्ति को विकसित करता है। उसकी मेधा की यही वह शक्ति है, जो सौंदर्य के विविध आयामों को जन्म देती है। यह भारतीय काव्य-शास्त्र में सर्जनात्मक शक्ति 'ललिता' का व्यष्टिगत रूप है। ये शिव की सखी ललिता हैं, जो जग के प्रपंच को हरती हैं और यही शक्ति जग को प्रपंचित भी करती है। पंडित विद्यानिवास मिश्र इसी ललिता को चित्त-कला का रूप मानते हैं और इसका संबंध शिव से मानते हैं और आनंद को समस्त कलाओं के उत्कर्ष के रूप में देखते हैं परिणामतः उनकी दृष्टि अत्यधिक आध्यात्मवादी हो गई है और यही आध्यात्मवादी दृष्टि अस्तित्ववाद पर भारी पड़ गई है।

मिश्रजी के चिंतन की कुछ महत्त्वपूर्ण पद्धतियाँ हमें देखने को मिलती हैं। ये हैं— सौंदर्यवादी, आध्यात्मवादी, संश्लिष्टतावादी, समग्रतावादी इत्यादि।

संश्लिष्टतावादी को यदि हम समझने का प्रयत्न करें तो हम यह देख सकते हैं कि हमारी इन्द्रियों, मन, बुद्धी और अंतःकरण के मध्य आधार आधेय संबंध होता है। मिश्र जी मनुष्य की सत्ता कला में, कला की शक्ति में शक्ति का आनंद में और आनंद की सत्ता को शिव के रूप में देखते हैं। समग्रतावादी दृष्टि हमें वहाँ दिखाई देती है, जहाँ कला को समग्र जाति के सत्य की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि को स्वच्छंदता वादी भी यदि हम कहें तो अनुचित न होगा क्योंकि जब वे कला के प्रयोजन की बात करते हैं तो उसे समस्त वादों प्रतिवादों से न केवल ऊपर की वस्तु स्वीकारते हैं, अपितु उसे किसी भी नैतिक प्रयोजन से पृथक मानते हैं।

उनकी लोक चेतना पर यदि हम विचार करते हैं तो हमें इसके मुख्यतः तीन आधार दृष्टिगोचर होते हैं। पहला आधार है (लोक गीत), दूसरा (लोक कथाएँ) और तीसरा (लोक प्रथाएँ।) इन तीन आधारों पर लोक जीवन के समग्र रूपों का उद्घाटन हुआ है।

विद्यानिवास मिश्र अपनी अद्भुत बिंब-योजना, अप्रतिम भाव-चित्र, कल्पना शक्ति , सुंदर प्रतीक विधान और शिश्ट वाग्पटुता का परिचय देते हुए वे न केवल भाव में लालित्य उत्पन्न कर देते हैं अपितु इन समस्त गुणों की प्रधानता के कारण उनके विचार में भी लालित्य उत्पन्न हो गया है।

Research summary

The Elegance contemplation of Vidyanivas Mishra

There has been elegance contemplation of Vidyaniwas Mishra and his elegance contemplation defined in three categories of beauty classical vision. These are aesthetic, art and public life. Elegance contemplation is establishment of consideration to human beings from nature, art and culture. Therefore there has been emphasized to establishment of correlation within it. It is the main objective of this dissertation. The human beings get inspiration from nature and create the different art for the different objective. Discussion of art as well as dialogue begin from here. It is necessary for art that clash to them for proving their significance.

There are some these types of clashes in the dissertation as well. There are two types of beauty in his elegance, one is naturalistic and second is artistic. Beauty is a monolithic thing for him. Beauty and elegance awakened condolences in our mind. There is difference between them. First belonged to all factor of nature, which have been given by god and second belonged to the compositions of human beings, which have been created by human. Although it is tough to see them with isolated outlook. Aesthetic is initial form of human love and elegance is consummation of human love, whom given title of sublime by the poetry scribes and beauty scribes. There are many work of beauty and elegance as like sense to mind as well as swell. Human beings

develop their creation power to get inspiration from naturalistic beauty. It is the power their intellect, which originate different dimensions of aesthetic. It is creativity power of 'lalita' in Indian poetic, which is personal form of lalita. It is sakhi lalita of Shiva, which finishes delusion of universe and delude delude the universe as well. Vidyaniwas Mishra told that "lalita is mind art and relates to Shiva as well as happiness is flourishing of all arts." With the result that his outlook became spiritualist and his spiritualist outlook defeated existentialism.

There are some important method of Mishra's contemplation, which are spiritualist, agglutinate, holistic and esthete. If we try to understand matter of agglutinate, we can see that these are relation among sense, mind, wisdom and conscience. Vidyaniwas Mishra observed that entity of human is in art, entity of art is in power and happiness is in form of Shiva. Holistic approach has been come in the light when art reveal the expression of truth, which belong to all human beings. Therefore we can say that his approach was romantic because he told that art is beyond to any discussion and dialogue. If we discuss his public awareness, it has been defined in three categories, which are- (1) folk song, (2) folklore and (3) folk practice. Vidyaniwas Mishra originate elegance with his pixel plan, unequaled couplets and decoroms eloquently and these quality lead the elegance in his thoughts.